HISTORY Lecture NO - 42, [B.A - 2nd] PAPER - 3rd

बाबर की उपलब्धियाँ

BY

DR. KOMAL KUMARI
[GUEST PROFE.]
SNSRKS, COLLEGE,
SAHARSA

Scanned with CamScanner

Q 1. बाबर के जीवन और उपलब्धियों का वर्णन कीजिए ।

Ans- बाबर का पिता उमर मिर्जा फरगना के एक छोटे से राज्य का स्वामी था, जो उसे अपने पूर्वजों से मिला था। जब बाबर की अवस्था केवल ग्यारह वर्ष की थी तब उसके पिता का परलोकवास हो गया। इस छोटी-सी अवस्था में बाबर अपने पिता के राज्य का स्वामी बन गया। बाबर छोटे से साम्राज्य से संतुष्ट न था। बाबर के अनुसार 1504 ई० में काबुल विजय करने के समय से लेकर 1526 ई० तक मेरा विचार सदा ही भारत पर अधिकार करने का रहा। बाबर अपने युग के एशियाई शासकों में सबसे अधिक प्रतिभाशाली था और किसी भी देश तथा भारत के सम्राटों में उच्च पद पाने योग्य था। फरिश्ता के अनुसार बाबर की आकृति अत्यन्त सुन्दर थी। साथ ही वह मिलनसार था

नेपुल के शब्दों में काबुल का सम्राट बाबर किसी भी आपत्ति से घबरा जाने वाला नहीं था। जो कार्य अत्यन्त कठोर होता था वह उसी को करना चाहता था। अपनी चारित्रिक विशेषताओं से उसने निम्न विजय प्राप्त की और भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की -

(i) पानीपत का प्रथम युद्ध :- पंजाब और लाहौर पर अधिकार करने के पश्चात् बाबर अपनी सेना के साथ पानीपत के मैदान में आ डटा और अपनी छोटी - सी सेना की सुरक्षा की व्यवस्था की। उसने एक ओर पानीपत के नगर से और दूसरी ओर खाइयों तथा कँटीली झाड़ियों से सुरक्षा कर ली। जब इब्राहिम लोदी को बाबर के आने की सूचना मिली तब वह अपनी सेना के साथ आगे बढ़ा। और पानीपत के मैदान में आ डटा। इब्राहिम लोदी की सेना इतनी विशाल थी की

उसका संचालन भी सुचारू रूप से नहीं किया जा सकता था। 21 अप्रैल, 1526 ई० को बाबर और इब्राहिम लोदी की सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। इब्राहिम लोदी की सेना के हाथी तोपखाने के सामने ठहर न सके और अपनी ही सेना को रौंदने लगे। चारों ओर बाबर के तेज घुड़सवारों ने घेर लिया और बाण वर्षा का प्रारम्भ कर दिया। भीषण हत्याकांड हुआ। इब्राहिम स्वयं लड़ता हुआ मारा गया। और उसकी सेना लड़ाई के मैदान से भाग खड़ी हुई। परिणामस्वरूप बाबर दिल्ली का सुल्तान बन गया। पानीपत के युद्ध ने दिल्ली साम्राज्य का बाबर को स्वामी बना दिया दिल्ली विजय के पश्चात उसने आगरे पर भी शीघ्र अधिकार कर लिया।

(ii) खनवा का युद्ध :- राणा सांगा दिल्ली पर अपना अधिकार करना चाहता था। क्यों कि उसका विश्वास था कि

अन्य आक्रमणकारियों के समान बाबर भी लूटमार करके वापस चला जायेगा। बाबर के भारत में स्थायी रूप से ~~रूक~~ रूक जाने से राणा को बड़ी निराशा हुई। भारत में अपना निष्कंटक राज्य स्थापित करने के लिए बाबर राजपूतों को नत मस्तक करना चाहता था। 17 मार्च, 1527 ई० को खनवा के युद्ध में बाबर और राणा की सेनाओं में भीषण संग्राम हुआ। इस युद्ध में राजपूत भी बाबर के तोपखाने के सामने ठहर न सके। राणा सांगा घायल हो गया, जिससे वह लड़ाई के मैदान से हटा लिया गया। इस प्रकार राजपूतों के विरुद्ध भी बाबर को सफलता हो गई॥

(iii) चन्देरी पर आक्रमण और विजय

बाबर ने खनवा विजय के पश्चात चन्देरी पर आक्रमण की योजना बनाई। इन दिनों चन्देरी में मेदिनी राय ~~का~~ शासन कर रहा था। वह राणा

सांगा का सामन्त था। 21 जनवरी, 1528 ई० को बाबर ने चन्देरी पर आक्रमण किया। अपने सैनिक को उत्तेजित करने के लिए उसने इस युद्ध को 'जेहाद' का नाम दिया। लगभग एक घण्टे के भीषण संग्राम के बाद चन्देरी पर बाबर का अधिकार स्थापित हो गया जो मलवा के राजवंश का था।

(IV) घाघरा का युद्ध :- चन्देरी में ही बाबर को अफगानों के उपद्रव की सूचना मिल गयी थी। यद्यपि बाबर ने इब्राहिम को पूर्णतया ध्वस्त कर दिया था, फिर भी उसका भाई बिहार में अपनी शक्ति संगठित कर रहा था। अतः बाबर ने आगरे से एक सेना के साथ प्रस्थान कर दिया और घाघरा नदी के किनारे पर आ डटा। महमूद लोदी ने प्रयत्न किया कि बाबर नदि को पार न कर सके, लेकिन बाबर ने नदी को पार कर लिया। इससे अफगान लोग इतना डर गये कि वे भाग खड़े हुये। यह

बाबर का अन्तिम युद्ध था।

निष्कर्ष :→ सन् 1530 ई० की ग्रीष्म ऋतु में बीमार हुमायूँ की जब दशा बिगड़ने लगी तब ज्योतिषियों ने कहा कि, "यदि बाबर किसी अमूल्यवस्तु का त्याग करें तो हुमायूँ स्वस्थ हो जायेगा।" इस पर हुमायूँ की जान बचाने के लिए बाबर ने अपनी जान ले लेने की प्रार्थना ईश्वर से की। सच्चे दिल की फरियाद ने असर दिखाया। हुमायूँ की दशा सही होने लगी और बाबर बीमार होने लगा। बीमार बाबर ने अमीरों से कहा था अब जब कि मैं रोगग्रस्त पड़ा हूँ आप लोगों को आदेश देता हूँ कि हुमायूँ को मेरा उत्तराधिकारी स्वीकार कर लो और सदैव उसके प्रति वफादार हो।

Scanned with CamScanner